21/05/2020

Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

(… continued)

Structure of Group

समूह की बनावट

किसी भी समूह की संरचना से तात्पर्य समूह के उन गुणों से होता है, जिसके आधार पर हमें यह पता चलता है कि समूह का आकार (size) कैसा है, समूह में सदस्यों की व्यैक्तिक भूमिका (individual role) कैसी है, सदस्यों के बीच आपस में सम्बन्ध किस तरह का है, तथा समाज के अन्य समूहों के साथ उसका सम्बन्ध कैसा है आदि। स्पष्ट है कि समूह की संरचना के आधार पर हमें समूह के बारे में अनेकों लाभदायक सूचनाएं मिलती हैं। समूह की संरचना के आवश्यक तत्त्व निम्नलिखित हैं-

1. **समूह का आकार (size of the group) -**

   समूह की संरचना का सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व समूह का आकार है। समूह के आकार से तात्पर्य समूह में सदस्यों की संख्या से है। जब समूह में सदस्यों की संख्या काम होती है तो उसे छोटा समूह (small group) कहा जाता है। जैसे- परिवार जिसमें पति-पत्नी के अलावा बच्चे, भाई-बहन आदि सम्मिलित होते हैं, एक छोटा समूह का उदाहरण है। सबसे छोटा समूह (smallest group) उस समूह को कहा जाता है जिसमें सदस्यों की संख्या मात्र दो होती है। जैसे- पति-पत्नी का समूह, मालिक और उनके नौकर का समूह, आदि।

समूह का आकार बाह्य (external) एवं आतंरिक (internal) कारकों द्वारा निर्धारित होता है। उदाहरणार्थ, परिवार का आकार बाह्य कारक जैसे नए बच्चे के जन्म लेने से बढ़ जाता है तथा किसी सदस्य की मृत्यु हो जाने से घट जाता है। उसी तरह से कुछ आतंरिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक भी हैं जिनसे समूह का आकार प्रभावित होता है। उदाहरणार्थ समूह के सदस्यों में अत्याधिक तनाव एवं गुटबंदी हो जाने से समूह के कुछ सदस्य समूह छोड़ कर अलग हो जाते हैं, जिससे समूह का आकार छोटा हो जाता है। राजनैतिक पार्टियों का आकार ऐसे कारणों से प्रायः घटता बढ़ता रहता है।

2. समूह में व्यक्ति की भूमिकाएं (individual roles in group) –

प्रत्येक समूह में प्रत्येक सदस्य की एक निश्चित भूमिका होती है। जब व्यक्ति किसी समूह का सदस्य बनता है, तो वह किस तरह से दूसरे सदस्यों के साथ व्यवहार करेगा, यह बहुत कुछ समूह संरचना के स्वरुप एवं उस संरचना के अंतर्गत उसके द्वारा की जाने वाली भूमिकाओं पर निर्भर करता है।

सामूहिक जीवन में व्यक्ति के कार्य या भूमिका कुछ खास-खास कारकों पर निर्भर होते हैं जो इस प्रकार हैं-

i) जिन समूहों की संरचना औपचारिक (formal) होती है उसके सदस्यों की भूमिकाएं प्रायः पूर्व परिभाषित एवं पूर्व निश्चय होती है।

ii) जिन समूहों की संरचना अनौपचारिक (informal) होती है, उन समूहों में सदस्यों की भूमिकाएं व्यक्तित्व गुणों (personality characteristics) एवं योग्यताओं द्वारा निर्धारित होती है।

iii) सामूहिक जीवन में व्यक्ति किस प्रकार कार्य करेगा, यह बहुत कुछ व्यक्ति के प्राथमिक समूह जैसे परिवार में प्राप्त किये गए प्रारंभिक अनुभवों पर निर्भर करता है। यह अनुभव जितना ही अधिक स्पष्ट एवं विस्तृत होगा, व्यक्ति द्वारा निभाई गयी भूमिका उतनी ही सराहनीय होगी।

3. समूह सम्बन्ध (group relations) –

समूह सम्बन्ध समूह संरचना का तीसरा प्रमुख तत्त्व है। समूह सम्बन्ध से तात्पर्य सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध से होता है। समाज मनोवैज्ञानिकों एवं समाज शास्त्रियों का सामान्य मत यह है कि समूह प्रायः समजातीय नहीं होते हैं और वे अक्सर कार्यात्मक रूप से कुछ छोटे-छोटे खण्डों

में बटे होते हैं और ऐसे खंड प्रायः एकरूपी (homogeneous) होते हैं। ऐसे खण्डों को उपसमूह (sub-group) कहा जाता है।

समाज मनोवैज्ञानिकों ने सिर्फ समूह संबंधों की चर्चा ही नहीं की है बल्कि इसके वैज्ञानिक अध्ययन की विधि का भी वर्णन किया है।

Moreno, 1934 ने एक ऐसी ही विधि का वर्णन किया है जिसे समाजमिति विधि (sociometry) कहा जाता है। इस विधि में समूह का प्रत्येक सदस्य गुप्त रूप से यह बतलाता है की वह समूह के अन्य सदस्यों में से किसे पसंद करता है तथा किसे नापसंद करता है। इस विधि द्वारा समूह संबंधों का विस्तृत अध्ययन निम्नलिखित है-

i) समूह के नेता से सभी अन्य व्यक्तियों का सम्बन्ध होता है। समूह का यह ऐसा व्यक्ति होता है जिसकी अन्तः क्रियाएं (interaction) सबसे अधिक होता है।

ii) Pairs में सम्बन्ध दो व्यक्तिओं तक सीमित होता है। ये दोनों व्यक्ति एक दूसरे को पसंद करते हैं।

iii) त्रिकोणी में सामूहिक सम्बन्ध मुख्यतः तीन व्यक्तिओं तक सीमित होता है। ये तीनो में से प्रत्येक एक दूसरे को पसंद करते हैं।

iv) समूह में एकाध ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जिनके साथ अन्य सदस्यों की अन्तः क्रिया न के बराबर होती है। ऐसे व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति न प्रेम करते है और न ही घृणा करते हैं।

4. <u>विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच सम्बन्ध (relationships among different social groups) –</u>

किसी भी समाज में बहुत तरह के सामाजिक समूह होते हैं। किसी समूह विशेषकर बड़े समूह की संरचना को समझने के लिए विभिन्न सामाजिक समूह के संबंधों के बारे में जानना आवश्यक है। उदाहरणार्थ, अगर किसी राज्य को एक बड़ा समूह मान लिया जाए तो यह आवश्यक है की इसकी संरचना हम सही-सही तभी समझ सकते हैं जब इस बड़े समूह के विभिन्न समूहों जैसे- ऑफिसरों का समूह, धार्मिक संगठनों, मज़दूरों का समूह, मंत्रियों का समूह, दुकानदारों का समूह, आदि के आपसी संबंधों के बारे में सही-सही जानें।

5. <u>सदस्य संगठन (member composition) –</u>

इससे तात्पर्य यह है की समूह की संरचना में किस प्रकार के सदस्य हैं। किसी समूह में सदस्यों की संख्या सामान्य रहने पर भी उसके व्यक्तित्व में भिन्नता हों के कारण उनके कार्य

भिन्न हो जाते हैं। इसका प्रभाव समूह व्यवहार पर भिन्न-भिन्न ढंग से पड़ता है। समूह की प्रभावशीलता उसके सदस्यों की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। यदि किसी समूह में सभी व्यक्ति बुद्धिमान एवं पढ़े-लिखे हैं तो वह समूह अधिक प्रभावशाली होगा। इसका प्रभाव समूह के संगठन पर होता है न की उसके आकार पर।

ऊपर किये गए वर्णन से यह स्पष्ट है की समूह की संरचना की व्याख्या समाज मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न तत्वों के रूप में किया है। इन सभी तत्वों पर ध्यान दें कर ही किसी समूह संरचना की व्याख्या की जा सकती है।

(…to be continued)

Dr. Hena Hussain
Asst. Professor
Department of Psychology
Oriental College, Patna City
WhatsApp No. – 9334067986
Email-drhenahussain@gmail.com